सज़ुण सूर चया, वञनि न विछोड़े जा,
तुंहिंजीअ सिक अंदर में, छेक अनेक किया,
सामी चए चकोर जां, सुकी नेण रहिया,
कड़ी करे दया, दरिसु ड़ींदें दास खे.

विरह-दग्ध भक्त प्रियतम परमेश्वर से कह रहा है कि हे साजन! हे प्रीतम! तुम्हारे बिरह की पीड़ा अब मुझसे सही नहीं जाती। मर्मांतक पीड़ा का वर्णन में अपने मुँह से नहीं कर सकता। तुम्हारे प्रेम ने मेरे हृदय को विदीर्ण कर डाला है। मेरी आँखें रो-रो कर चकोर पंछी की आँखों जैसी सूख गयी हैं। तुम इस दास पर कब दया कर दर्शन दोंगे ?

ईश्वर के प्रति असीम प्रेम ही भक्ति का मर्म है। परमेश्वर से प्रेम करना ही भक्ति है। अमृतस्वरूपा भक्ति में माधुर्य भाव की प्रधानता है। अर्थात् प्रेम-भाव माधुर्य भाव से भरा हुआ होता है। भक्त-जब परमेश्वर के साथ किसी भी प्रकार से संबंध जोड़ता है, तब उसकी अभिव्यक्ति माधुर्य-भाव से ही छलकती है। परमेश्वर को अपना पति या प्रियतम मानकर पत्नी या प्रियतमा की भावना से भक्ति करना 'मधुरा' / 'माधुर्य-भाव' की भक्ति है। यह भक्ति परमेश्वर और भक्त के मधुर संबंध पर आश्रित है। इस में प्रेम, रूठना, मनाना, विरह का दर्द और मिलन का सुख आदि अनेक भाव समाये हुए हैं। भक्ति में भी प्रेम के दो भेद (विप्रलंभ शृंगार एवं संयोग शृंगार) होते हैं। गोपियाँ माधुर्य भाव वाली भक्ति की आदर्श हैं। श्रीकृष्ण से ऊनका नाता इसी प्रकार का था, इस कारण वे श्रीकृष्ण के विरह में विरह दु:ख का अनुभव करती हैं। संत मीराबाई एवं राबिया की भक्ति भी इसी प्रकार की है। ये सब परमात्मा के प्रेम में, विरह में और दर्शन पाने की चाह में तड़पने वाली नारियाँ हैं।

श्रीकृष्ण के प्रेम में दीवानी होकर अपने घर का त्याग कर, विष का प्याला भी हँसते-हँसते होंठों से लगाने वाली एवं 'ए री, मैं तो प्रेम दीवानी, मेरा दरद न जाणै कोय' कहने वाली मीराबाई की दशा 'घायल की गति घायल जाणै, जो कोई घायल होय' की भाँति है। 'सुली ऊपर सेज हमारी, सोवण किस विध होय' कहने वाली मीराबाई अथवा परमेश्वर के दर्शन के लिए तड़पने वाली राबिया तथा सामी साहब द्वारा वर्णित भक्त में कोई अंतर दिखाई नहीं देता। यह भक्त भी विरह का मारा हुआ है। प्रभु के दर्शन का प्यासा है। मीराबाई जैसा।

मीरा के प्रभु गिरधर नागर, बेग मिलज्यो आय।'

■